डॉ. शशि भूषण
अतिथि सहायक प्राध्यापक
हिन्दी विभाग
एस. आर. ए. पी. कॉलेज,
बारा चकिया।

B.A. Part-II
हिन्दी प्रतिष्ठा
Paper-III

Date:- 13-02-2023

Ajanta
Page No.
Date

यह दीप अकेला

यह दीप अकेला स्नेह भरा
है गर्व भरा मदमाता पर
इसको भी पंक्ति को दे दो

यह जन है : गाता गीत जिन्हें फिर और कौन गायेगा
पनडुब्बा : ये मोती सच्चे फिर कौन कृति लाएगा ?
यह समिधा : ऐसे आग हठीला बिरला सुलगायेगा
यह अद्वितीय : यह मेरा : यह मैं स्वयं विसर्जित :

यह दीप अकेला स्नेह भरा
है गर्व भरा मदमाता पर
इसको भी पंक्ति को दे दो

यह मधु है : स्वयं काल की मौना का युगसंचय
यह गोरस : जीवन-कामधेनु का अमृत-पूत पय
यह अंकुर : फोड़ धरा को रवि को तकता निर्भय
यह प्रकृति, स्वयम्भू, ब्रह्मा, अयुत :
इस को भी शक्ति को दे दो

यह दीप अकेला स्नेह भरा
है गर्व भरा मदमाता पर
इसको भी पंक्ति को दे दो

यह वह विश्वास, नहीं जो अपनी लघुता में भी काँपा,
वह पीड़ा, जिसकी गहराई को स्वयं उसी ने नापा,
कुत्सा, अपमान, अवज्ञा के धुँधुआते कड़वे तम में
यह सदा द्रवित, चिर-जागरूक, अनुरक्त-नेत्र,
उल्लम्ब-बाहु, यह चिर-अखंड अपनापा
जिज्ञासु, प्रबुद्ध, सदा श्रद्धामय
इस को भी भक्ति को दे दो

यह दीप अकेला स्नेह भरा
है गर्व भरा मदमाता पर
इस को भी पंक्ति को दे दो

'यह दीप अकेला' कविता की विशेषताएँ

'यह दीप अकेला' कविता अज्ञेय द्वारा रचित काव्य-संग्रह 'बावरा अहेरी' से ली गई है। यह कविता व्यक्ति और समाज के संबंधों पर आधारित है। जहाँ व्यक्ति की सार्थकता समाज के साथ जुड़ जाने में ही है।

1) व्यक्ति और समाज के संबंधों की व्याख्या- प्रस्तुत कविता व्यक्ति और समाज के संबंधों को महत्व देती है। कवि कहना चाहता है कि व्यक्ति चाहे कितनी भी योग्यता लिए हुए है, चाहे उसके पास कितनी भी शक्ति है परन्तु वह वास्तव में शक्तिमान और

योग्य तभी बन पाएगा जब वह अपनी योग्यता और शक्ति को समाज को समर्पित कर देगा। 'स्व' का विसर्जन करके वह समाज का अहम अंग बन सकता है।

2) विलक्षण व्यक्तित्वों का उदाहरण — कवि ने अनेक विलक्षण एवं प्रतिभाशाली व्यक्तित्वों के उदाहरण प्रस्तुत किये हैं, जिनकी महत्ता एवं प्रतिभा समाज को उत्तम बनाती है। वे लिखते हैं कि यदि कोई गीतकार है, उस जैसा गीत कोई नहीं गा सका और यदि कोई गोताखोर है जो समुद्र में जाकर मोती ला सकता है, तो ऐसे व्यक्तित्व अपने आप में पूर्ण हैं, परंतु इनके गीतों की और गोताखोर की बहादुरी की सार्थकता तभी सिद्ध होगी जब वे समाज हेतु इन प्रतिभाओं का उपयोग करेंगे।

3) व्यक्ति की उपयोगिता को बढ़ावा- कवि कहता है जिस तरह दीपक की चमक असाधारण है उसी भाँति व्यक्ति भी अपनी-अपनी प्रतिभा में असाधारण होता है। वह अकेला अपनी शक्ति के गर्व में मदमाता रहता है, परंतु यदि वह अपनी इस शक्ति को समाज में समर्पित कर दे तो कोई भी समाज या राष्ट्र समृद्ध और उन्नत बन सकता है।

4.) नवीन प्रतीक — कविता में मधुमक्खी, मक्खन, शहद, अंकुर आदि नवीन प्रतीक है जो अपनी-अपनी विशेषताओं और गुणों द्वारा अमूल्य बन पाए हैं। शहद मधुमक्खी के कठिन परिश्रम का प्रतीक है, मक्खन जीवन रूपी कामधेनु के पवित्र अमृत तुल्य दुध का प्रसाद है और बीज से फुटा अंकुर निरंतर सत्य और निर्भयता से जीने की प्रेरणा का प्रतीक है।

5.) प्रभावमयी भाषा शैली — इस कविता की भाषा तत्सम शब्दावली प्रधान, प्रांजल हिन्दी है। उपमा और रूपक के साथ-साथ अनुप्रास अलंकार का भी प्रयोग हुआ है। मुक्त छंद का प्रभाव और प्रवाह अनायास मन को छूते हैं। व्यक्तित्व की अद्वितीयता को प्रकट करने के लिए जिन उपमानों का सहारा लिया गया है, वे सर्वथा अनूठे और नए हैं।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि दीपक यहाँ उस व्यक्ति का प्रतीक है जो स्नेह से भरा है और अपनी शक्तियों के अहंकार में चूर रहता है। अहंकार का मद हमें अपनों से अकेला कर देता है। इसे पंक्ति में शामिल हो जाना चाहिए। दीप या व्यक्ति का समूह या समाज में विलय ही उसकी ताकत का, उसकी सत्ता का सार्वभौमिकरण है उसके लक्ष्य एवं उद्देश्य का सर्वव्यापीकरण है।